हिंदी उपन्यासों में पर्यावरण चेतना और मानव–प्रकृति संबंध

नेहा एन.

शोधार्थी, राजाजीनगर, बेंगलुरू.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18775828

ABSTRACT:

विज्ञान और तकनीकी के अत्यधिक प्रचलन ने समकालीन मानव जीवन को यांत्रिक बना दिया है, जिससे प्रकृति के साथ उसका नैसर्गिक संबंध क्षीण होता जा रहा है। हिंदी उपन्यासों में मशीनीकरण से उत्पन्न कुंठा, पर्यावरण प्रदूषण और मानव अस्तित्व के संकट को प्रमुखता से उभारा गया है। 'एक उम्मीद और', 'जंगली फूल' और 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' जैसी कृतियों के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि मानसिक शांति और अस्तित्व रक्षा के लिए 'प्रकृति की ओर वापसी' ही एकमात्र विकल्प है। साहित्य न केवल इन समस्याओं का चित्रण करता है, बल्कि भावी पीढ़ी में पर्यावरण संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त जीवन और प्रकृति-केंद्रित जीवनशैली के प्रति दायित्व बोध भी जगाता है।

KEYWORDS:

हिंदी उपन्यास, पर्यावरण चेतना, मानव-प्रकृति संबंध, मशीनीकरण, पर्यावरण संरक्षण.

आज पूरे विश्व में पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं के बारे में चर्चाएँ हो रही हैं। बड़े-बड़े देश संगोष्ठियों में दावा करते हैं कि वे अति शीघ्र इस समस्या का समाधान करेंगें। विकसित देश करोड़ों रूपए मुआवज़े के रूप में देते हुए कहते हैं कि हम भी पर्यावरण संरक्षण की मुहिम में आपके साथ हैं। साल दर साल यह चलता ही आ रहा है। अंत में सबसे बड़ा प्रश्नचिन्ह इसी मुद्दे पर आता है कि क्या वे अपनी ऊर्जा की खपत कम करने के लिए तैयार हैं? भोग-विलास के जीवन को छोड़कर प्रकृति की ओर वापसी का संकल्प लेने के लिए तैयार हैं? पर्यावरण संरक्षण के प्रति मनुष्य के मन में चेतना जगाने से ही इस समस्या का समाधान मिल सकता है।

विज्ञान एवं तकनीकी के अद्यतन प्रचलन के कारण मानव जीवन यांत्रिक बन गया है। विज्ञान और तकनीकी के प्रारंभिक प्रचलन के समय

मानव ने यह नहीं सोचा था कि एक दिन वह स्वयं मशीन के जंगल में खो जाएगा। मशीनीकरण ने केवल यांत्रिकता को ही नहीं जन्म दिया, जीवन में कृत्रिमता को भी बढ़ावा दिया है। आज मनुष्य का जीवन मशीन से शुरू होकर, मशीन में ही खत्म होता है।

उपन्यास में भविष्य में मशीनीकरण से उत्पन्न समस्याएँ तथा मनुष्य पर पड़नेवाले परिणाम के बारे में चित्रित किया गया है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि भविष्य में हर काम रोबोट करेगा। विज्ञान की इस प्रगति के कारण मानवों की नौकरी भी चली जाएगी। अगर किसी कारणवश कोई सड़क दुर्घटना या फिर अन्य दुर्घटनाएँ घटीं तो उस मानव को 'अर्ध मानव' (आधा मानव) घोषित कर उसे घर में बिठाया जाएगा। स्वयं को निष्प्रयोजक मानकर वे मानसिक कुंठा में चले जाते हैं तथा सरकार के विरोध विद्रोह पर उतर आते हैं। यह भले ही काल्पनिक उपन्यास हो परंतु भविष्य में ऐसी स्थिति उभरकर आ सकती है। इस समय अधिकारियों को संयम से काम लेना पड़ता है। वहाँ के अधिकारीगण उन 'अर्ध मानवों' को फिर से मुख्यवाहिनी में लाने का प्रयास करते हैं। मनोवैज्ञानिकों की मदद से उनमें आत्मविश्वास जगाना चाहते हैं।

आज हम मशीनों से पूर्ण रूप से अपने आप को अलग नहीं कर सकते हैं। आज आवश्यकता है मानव-मन, मशीनी यंत्र और प्रकृति के बीच उचित समन्वय की। उपन्यास में मनुष्यों को यंत्रों की तुलना में श्रेष्ठ माना है। मनुष्यों को यह भी इशारा किया गया है कि यंत्रों के पीछे भागते-भागते एक दिन मनुष्य अपना मानसिक संतुलन ही खो बैठेगा। उपन्यास में मनोचिकित्सक के पास समालोचन कराने का यह अर्थ है कि मनुष्य में मानवीय संवेदनाओं को पुनर्स्थापित करना। आगे के समय में साहित्य ही यह काम कर सकता है। यहाँ बात केवल पर्यावरण संरक्षण की नहीं है, बात मानव जीवन के अस्तित्व की है। अगर इस तनाव भरी जिंदगी से दूर जाकर कोई आनंद प्राप्त करना है तो हमें प्रकृति का स्वच्छंद वातावरण, हरियाली, पहाड़-पर्वत, घने जंगल के सानिध्य में ही जाना पडेगा। इसके लिए भी पर्यावरण संरक्षण अनिवार्य है।

प्रकृति हमारे लिए धरोहर है। उसे आगे की पीढ़ी तक पहुँचाना हमारा कर्तव्य है। प्रकृति प्रेम की भावना को युवा मन में संप्रेषित करने का काम साहित्य ने हमेशा से ही किया है। हिंदी उपन्यास 'एक उम्मीद और' में विधाता तथा गर्भस्थ शिशु के बीच संवाद की एक अनूठी कथा वस्तु है। यहाँ शिशु पहले जन्म में कई पाप में भागीदार था। माँ के गर्भ में उसे यह सब याद आता है। विधाता उसे धरती पर जाने का एक और

मौका देते हैं ताकि वह धरती पर पर्यावरण की रक्षा करे। विधाता उस शिशु से कहते हैं कि "धरती से मानवता का पूर्ण समापन नहीं हुआ है। इसी 'एक उम्मीद और' के साथ तुम धरती पर जा रहे हो। तुम्हारा मिशन विश्व के उन चुने हुए समर्पित व्यक्तियों से जुड़कर धरती पर पर्यावरण और आदमी की आदमियत की रक्षा करना है। अभी भी समय है सर्वनाश रोकने के लिए, अभी भी समय है। शांति, विश्वबंधुत्व और प्राकृतिक सुषमाओं की रक्षा हो सकती है। विषाक्त वातावरण में अभी भी प्रेम और आनंद का शीतल समीर बह सकता है।" यहाँ मोहभंग की मानसिकता के बदले एक आशादायी भाव का प्रवाह दृष्टव्य है।

उपन्यास में विधाता गर्भस्थ शिशु को उसके जीवन का मकसद समझाते हैं। उस शिशु को 'आनंद' कहकर पुकारते हुए 'अमीना' नामक लड़की को आनंद के जीवन में सहगामिनी के रूप में आने की भविष्यवाणी भी करते हैं। "तुम आदमी और आदमी के बीच के प्रदूषण को रोकने की प्रतिबद्धता लिए हुए होगे और वह इंसान और प्रकृति के बीच के रिश्ते को बदतर होने से रोककर उसे बेहतर बनाने का संकल्प अपने में लिए होगी।" यहाँ 'अमीना' तथा 'आनंद' की जोड़ी देश के पर्यावरण और भाईचारे की रक्षा और विकास के लिए पूर्ण रूप से समर्पित रहेगी।

इस उदाहरण के माध्यम से हम यह कह सकते हैं कि मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना से ही पर्यावरण संरक्षण हो सकता है। यहाँ वास्तविकता से पाठकों को अवगत कराने की कोशिश की गई है। मानव जीवन तो संघर्षों से भरा है। शहर हो या गाँव सभी के अपने-अपने साधक-बाधक तो होते ही हैं। प्रकृति की ओर वापसी आसान नहीं है। दृढ संकल्प के साथ लक्ष्य प्राप्त करना मुश्किल भी नहीं है। यहाँ पाठकों को भ्रम में नहीं रखा गया है, उसे संघर्ष करके अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी गई है। पर्यावरण संरक्षण के लिए कई लोगों ने प्राणों का बलिदान भी दिया है। सदियों पहले बिश्नोई समाज ने पेड़ों की रक्षा हेतु आत्म समर्पण किया था। उसी प्रकार हिंदी उपन्यास 'एक लड़की पानी पानी' में 'श्री' और 'अउम' विश्व कल्याण हेतु अपने प्राण दांव पर लगाते हैं।

भविष्य में मानव चंद्र पर जाकर वहाँ आविष्कार करते हैं। काफी हद तक वे सफल भी होते हैं। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापाधिक्य जैसे संकटों के कारण धरती अब जीने लायक नहीं होती जा रही है और भूमि से चंद्र पर भेजे गए वैज्ञानिक इसे सुधारने का प्रण लेते हैं। उपन्यास का एक पात्र 'परिश्रम' चंद्र पर 'धन्वंतरी' नामक सस्यधाम में तरह-तरह के

पौधे उगाता है जिसे धरती से ही लाया गया था। उसे अब चंद्र के वातावरण में उगने योग्य बनाया भी गया था। वह अपने साथियों के साथ वापस धरती पर जाना चाहता है और फिर से उसे मनुष्य के वास योग्य बनाना चाहता है।

मनुष्य का प्रकृति के प्रति आकर्षण उसका नैसर्गिक स्वभाव है। वर्तमान समय में ऐसे कई प्रबल कारण उत्पन्न हुए कि वह प्राकृतिक साहचर्य की आकांक्षा का भाव फिर से मानव के दिल में पनप रहा है। यांत्रिकीकरण के कारण आज जीवन यांत्रिक बन चुका है। मनुष्य के सकल क्रियाकलाप यंत्रों से ही हो रहे हैं। महानगरीय भीड़ भरे वातावरण से उपजते तनाव तथा पर्यावरण प्रदूषण से स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों से विमुक्त होने के लिए प्रकृति के सुकोमल प्रांगण में वापस जाना ही सही विकल्प है। चयनित हिंदी उपन्यासों में भौतिक सुख-सुविधा की चाह से प्रकृति से दूर रहे इंसान को वापस प्रकृति की गोद में लाने का प्रयास किया गया है। उपन्यास के माध्यम से मनुष्य को प्राकृतिक साहचर्य की आशा से संचालित दिखाना सचमुच बहुत सार्थक और महत्वपूर्ण है।

हिंदी उपन्यास 'जंगली फूल' में अत्यंत सुंदरता से प्रकृति की महानता का चित्रण है। हम इस सत्य को नकार नहीं सकते हैं कि प्रकृति ही हमारी माता है। माता कभी भी अपनी संतान को निराश नहीं करती है। उपन्यास में आदिवासी समुदाय के जीवन संघर्ष तथा हम सब के पूर्वजों ने आहार की खोज के लिए जिन समस्याओं का सामना किया था, और उन्हें अंत में किस प्रकार से सफलता मिली, इसका समग्र चित्रण है। 'तानी' जो उपन्यास का कथा नायक है, अपने लोगों को भूख से बचाने के लिए 'अन्न' की खोज में निकलता है। उसे यकीन था कि 'धान' की खोज में वह सफल होगा। उसके कस्बे ने कई सारी चुनौतियों का सामना किया था। प्राकृतिक विपदाओं के कारण उनके कुटीर नष्ट होते थे, ठंड के कारण बच्चे बीमार होते थे, अपने लोगों के लिए पर्याप्त मात्रा में 'अन्न' उगा नहीं पाता था, लेकिन उसने प्रकृति के प्रति अपना अटूट विश्वास बनाए रखा। उसे विश्वास था कि उसकी समस्या का समाधान प्रकृति में ही निहित है। अंत में वह धान के बीजों को प्राप्त करता है तथा अपने कस्बे के सामने ज़मीन में बो देता है। कुछ समय के बाद पौधे आने लगते हैं तो सभी लोग खुशी मनाते हैं। "यही है न, जिसे धान कहते हैं? तानी की यात्रा सफल रही। मेरे प्राणों से प्यारे भाई की यात्रा सफल रही।" इस पूरे कथन के माध्यम से हमें यह संदेश मिलता है कि हमारे पूर्वजों ने हर समस्या का समाधान प्रकृति से ही पाया है। मानव जाति की विकास यात्रा के बारे में

अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि प्रकृति ने ही हमेशा मनुष्य को सहारा दिया है। इसे सकारात्मक सोच सकते हैं। आज मनुष्य के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। जल-वायु परिवर्तन के कारण भविष्य में मानव जाति के अस्तित्व पर ही खतरा आ सकता है। परंतु हताश होने की आवश्यकता नहीं है, एक सकारात्मक सोच के साथ प्रकृति की आवाज को सुनने की आवश्यकता है। आज नित-नए रोग, मानसिक रूप से तनाव ग्रस्त मनुष्य को अपनी जीवन-शैली सुधारने की ज़रूरत है। आज भी प्रकृति मनुष्य की हर समस्या का समाधान देने में सक्षम है, प्रकृति केंद्रित जीवन शैली को अपनाने से ही मनुष्य का जीवन सुगम हो सकता है।

हिंदी उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' प्रकृति के सानिध्य को ही सर्वोपरि मानता है। निम्न मध्यवर्गीय दंपतियों के जीवन में कई चुनौतियाँ हैं, वे अपने जीवन में खुशी पाने के लिए मन की खिड़की द्वारा उस जादूई परिवेश में प्रवेश करते हैं, जहाँ प्रकृति के साथ आत्मसात कर सकते हैं। इस उपन्यास में प्रकृति के सहज सौंदर्य का वर्णन है। "टीले के ऊपर सूखे पत्तों का ढेर था। उसी के पास सोनसी को रघुवीर प्रसाद ने उतारा। उन पत्तों के अंदर के अंधेरे में चार जुगुनू पास-पास चमक रहे थे। सोनसी ने पत्तों को हटाया तो जुगुनू एक-एक कर उड़ गए। उड़ते हुए जुगनुओं की चमक की परछाई उन्होंने तालाब में देखी।" यहाँ एक सामान्य सी घटना का सुन्दर चित्रण है। पूरे उपन्यास में ऐसी अद्भुत प्रकृति सौंदर्य का वर्णन है जिसे कभी मनुष्य ने सुंदरता के नज़रिए से शायद देखा ही न हो।

वर्तमान समय में समाज में एक विचित्र स्थिति उत्पन्न हुई है। प्रकृति के साथ रूबरू होने का अर्थ है, किसी प्रसिद्ध पर्यटन क्षेत्र का दौरा करना। नदी तट या समुद्र किनारे हो या फिर पहाड़ी क्षेत्र या फिर हिमनद पर्वत श्रेणियाँ, वहाँ के सौंदर्य के आस्वादन से ज्यादा मनुष्य का मन वहाँ भी दिखावे के जीवन पर ही आकर्षित होता है। फ़ोटो खींचना, पर्यटन के लिए किए गए खर्चों के बारे में बताना इसी में ही पूरा ध्यान केंद्रित होता है। इस कारण पर्यटन का मुख्य उद्देश्य ही गौण हो जाता है। उपन्यास में यह बखूबी दर्शाया है कि प्राकृतिक सुंदरता तो अपने आस-पास भी उपलब्ध है लेकिन मनुष्य में वह दृष्टि होने की आवश्यकता है जिससे वह उस सुंदरता को निहारे। शहर में भी अगर ध्यान पूर्वक देखा जाए तो किसी पेड़ में बैठी चिड़िया दिखेगी। उसकी चहचहाहट सुनाई देगी। अपने घर में एक छोटे से गमले में भी एक पौधा उगाया जाए तो फूल की महक का आस्वादन कर सकते हैं। 'प्रकृति की ओर वापसी' का अर्थ यह नहीं है

कि मनुष्य फिर से गुफाओं में रहने के लिए चला जाए या फिर साल में चार दिन किसी सुप्रसिद्ध पर्यटन क्षेत्र का दौरा करके आए और कहे कि मैंने प्रकृति के साथ आत्मसात कर लिया। प्रकृति की ओर वापसी का तात्पर्य है, मनुष्य अपनी जड़ों को पहचाने। उसका अस्तित्व ही प्रकृति से जुड़ा है। अपने आस-पास एक जैसा प्रकृति केंद्रित वातावरण का निर्माण करने का प्रयास करें तथा उसे देखकर आनंदित होना सीख जाए।

मनुष्य की कुछ आदतों ने ही उसे प्रकृति से विमुख किया है। जलवायु परिवर्तन, भूमंडलीय ऊष्मीकरण आदि तो वैश्विक समस्याएँ हैं। उसी प्रकार कुछ ऐसी समस्याएँ भी हैं जो देखने में बिलकुल साधारण सी लगती हों, लेकिन वास्तव में उन समस्याओं से भी बड़ी हैं। आज मनुष्य के कुछ आचरण इस प्रकार हैं कि वह उसे पूरी तरह से त्याग भी नहीं सकता है लेकिन और बढ़ावा देने के बजाए नियंत्रण में लाने का प्रयास अवश्य कर सकता है। 'प्लास्टिक उत्पादों के उपयोग में आधिक्य' में एक साधारण से दिखनेवाले उदाहरण से इस समस्या की गंभीरता के बारे में विचार प्रस्तुत करना चाहती हूँ।

प्रकृति ने फलों को प्राकृतिक रूप में ही छिलकों के रूप में रक्षा कवच दिया है। संतरा, मौसंबी, मकई आदि फल इसके लिए उदाहरण हैं। अगर कोई भी उस फल को खाना चाहता है तो छिलका निकाल कर खा सकता है। दस साल के पहले तक भी शायद भारत में सभी लोग उसे बाज़ार से उसी अवस्था में ही खरीदते थे। आज उन फलों के छिलके निकालकर उसे एक प्लास्टिक के बक्से में सजाकर बड़े-बड़े मॉलों में वातानुकूलित दुकानों में सजाया जाता है। उसे खाने के लिए प्लास्टिक के चम्मच, घर लाने के लिए फिर से प्लास्टिक के थैले। यह अत्यंत दुखद बात है कि मनुष्य इसे अपनी शान का प्रतीक मानता है। जो फल कुछ साल पहले बाज़ार में टोकरियों में बिकता था, घर से थैला लेकर जाते थे और खरीदकर लाते थे और ताजा-ताजा ही खाते थे वही चीज आज प्लास्टिक में कैद होकर बिक रही है। इन फलों को प्रकृति ने स्वयं रक्षा कवच दिए हैं, उसे मानव निर्मित प्लास्टिक की रक्षा की आवश्यकता नहीं है। विडंबना यह है कि जो अपने आप को शिक्षित और पढ़े-लिखे कहते हैं, दिन-प्रतिदिन पर्यावरण प्रदूषण के विरुद्ध गहरी चिंता जताते हैं, वही इसे खरीदते हैं, और सोचते हैं कि अब वे आधुनिक बन गए। धीरे-धीरे इस पाश्चात्य जीवन शैली का अंधानुकरण शहरों के साथ गाँव तक भी पहुँच गया है।

आज की परिस्थितियों में कुएँ का पानी पीना या फिर रसायन

मुक्त आहार का सेवन करना सौभाग्य की बात लगने लगी है। 'पैसेवालों के पानी पीने का अंदाज' इस वाक्य के प्रयोग के माध्यम से लेखक ने पाठकों को समाज की एक वास्तविकता से परिचित कराया है। इसके साथ-साथ एक और सत्य का उजागर भी किया है। शहरों में प्लास्टिक कचरे का संग्रह उसे पुन: उपयोग करने का प्रयास तो हो रहा है लेकिन उन हजारों गाँवों में ऐसी कोई सुविधा नहीं है जहाँ प्लास्टिक ने अपने कदम रखे हैं। वे अन्य कचरे की भाँति नारियल के पेड़ के नीचे ही सड़ेंगें। करोड़ों वर्षों तक वहीं सड़ते रहेंगें। पेड़ को नुकसान पहुँचेगा, मृदा प्रदूषण का कारण भी बनेगा।

यहाँ सोचने वाली बात यह है कि जब तक मनुष्य अपनी जीवन शैली में सुधार नहीं ला सकता तब तक पर्यावरण संरक्षण का उद्देश्य सफल नहीं होगा। बाज़ार जाते समय थैली ले जाना हो या फिर अपने साथ पीने के पानी ले जाने से ही मनुष्य की शान बढ़ेगी क्योंकि वह पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्व को निभा रहा है। प्रकृति की ओर वापसी का सही अर्थ यही है।

प्रकृति के प्रति अपने दायित्व को निभाने के प्रति मनुष्य को गंभीरता से सोचना पड़ेगा। आज प्रकृति हम सब की जीवनदायिनी है। इसका संरक्षण-संवर्धन हर एक मनुष्य का कर्तव्य है। यह केवल सरकार या पर्यावरणविदों का काम नहीं है। स्वच्छता आंदोलन का मूल उद्देश्य धरती को स्वच्छ रखना है केवल अपने घर को स्वच्छ रखने से नहीं है। प्लास्टिक का अधिक उपयोग, ऊर्जा की अंधाधुंध खपत, खाने-पीने की चीजों की बर्बादी आदि को नियंत्रण में लाना चाहिए। अपने घर के प्लास्टिक को किसी नाले में या फिर नदी में फेंककर हम खुद को जागरुक नागरिक नहीं कह सकते हैं या फिर अगर हमारी आँखों के सामने वृक्षों के दोहन को देखते हुए उसका विरोध न करना तथा यह धारणा बना लेना कि अगर चार पेड़ कटेंगे तो क्या हुआ? दुनिया में तो करोड़ों पेड़ हैं, सबसे चिंताजनक विषय है। हमारे आस-पास जाएँ तो काट से बनी हुई कई सारी वस्तुएं दिखाई देती हैं। अब मनुष्य को आत्मावलोकन करना चाहिए कि क्या मैंने आज तक कम से कम एक वृक्ष को उगाया है? अगर उगा नहीं पाए तो जिंदगी में कभी किसी वृक्ष को पानी दिया है? यह भी मुख्य है, अमुख्य नहीं। अगर हर व्यक्ति यही सोचेगा तो धरती स्वर्ग बन जाएगी।

संदर्भ :

1. अभिमन्यु अनत, एक उम्मीद और, पृ. सं. 128
2. अभिमन्यु अनत, एक उम्मीद और, पृ. सं. 119
3. जोराम यालाम, जंगली फूल, पृ.सं. 132
4. विनोद कुमार शुक्ल, दीवार में एक खिड़की रहती थी, पृ.सं. 68